शिक्षा - नीति का निर्माण (Formulation of Education Policy) →

शिक्षा के क्षेत्र में बनाये गये राष्ट्रीय नियमों, व्यवस्थाओं या संकल्पों को ही राष्ट्रीय शिक्षा - नीति के नाम से पुकारा जाता है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा - नीति से अभिप्राय उन दिशा निर्देशों, नियमों तथा सिद्धान्तों से है जिनके आधार पर राष्ट्र में शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। दूसरों शब्दों में कह सकते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा - नीति उन मूलभूत सिद्धान्तों या नियमों या प्राथमिकताओं को इंगित करती है जिनके आधार पर सम्पूर्ण राष्ट्र की शैक्षिक गतिविधियों का नियोजन तथा संचालन किया जाता है तथा जिनके आधार पर विभिन्न राज्य व शिक्षा - संस्थाएँ अपने शैक्षिक कार्यक्रम बनाते हैं तथा उन कार्यक्रमों को व्यावहारिक रूप देते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा - नीति का निर्माण (Formulation of National Policy on Education) →

प्रजातंत्र में जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि ही राष्ट्र की सभी प्रकार की नीतियाँ बनाते हैं; इसलिए कुछ लोगों का विचार है कि राष्ट्रीय शिक्षा - नीति का निर्माण भी जनता द्वारा चुने प्रतिनिधियों को करना चाहिए। परन्तु इस मत का विरोध करने वाले लोगों का कहना है कि जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि राष्ट्र की जनसंख्या का राजनीतिक प्रतिनिधित्व करते हैं। शिक्षा एक

Scanned with CamScanner

सामाजिक तथा सुधारात्मक प्रयास है. हमारे भारतीय समाज का अधिकांश भाग शैक्षिक रूप से अविकसित है अतः केवल हाथ गिनकर शिक्षा की नीति निर्धारित नहीं की जा सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्धारण में समाज के जागरूक वर्गों का सहयोग लिया जाना आवश्यक है जिससे एक सर्वगुण-सम्पन्न राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण सम्भव हो सके।

स्वतंत्रता के उपरान्त भारत में शिक्षा कोठारी आयोग (1964-66) ने अपने महत्वपूर्ण प्रतिवेदन में राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के निर्माण की आवश्यकता पर जोर दिया था जिसके फलस्वरूप भारत सरकार ने सन् 1968 में स्वतंत्रत भारत की प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा-नीति की घोषणा की इसके लगभग दस वर्षों के उपरान्त सन् 1977 में केन्द्र में जनता सरकार के आने पर इस शिक्षा नीति में बदलाव की आवश्यकता महसूस की गई। तब सन् 1979 में जनता सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसविदा तैयार किया।

राष्ट्रीय शिक्षा-नीति की विशेषताएँ (Characteristic of National Policy on Education) →

① राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार नागरिकों की मातृ-भाषा तथा राष्ट्र भाषा होना चाहिए।

② राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सम्बंध आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से होना चाहिए।

③ राष्ट्रीय शिक्षा नीति अपने आप में व्यावहारिक व कार्यपरक होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

(5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति विकासात्मक, सृजनात्मक तथा उत्पादक होनी चाहिए।

(6) राष्ट्रीय शिक्षा नीति राष्ट्रीय एकता व सौहार्द को सुदृढ़ करने में समर्थ होनी चाहिए।

(7) राष्ट्रीय शिक्षा नीति राष्ट्र की आवश्यकता व क्षमता का ध्यान रखने वाली होनी चाहिए।

(8) राष्ट्रीय शिक्षा नीति छात्रों में व्यापक, वैश्विक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में समर्थ होनी चाहिए।

(9) राष्ट्रीय शिक्षा-नीति भौगोलिक, सामाजिक या आर्थिक आधार पर विद्यमान शैक्षिक विषमताओं को दूर करने वाली होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

Date
Page

सतत शिक्षा → जीवन पर्यन्त शिक्षा सतत चलने वाली प्रक्रिया या शिक्षा है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को उसके जीवन के विभिन्न चरणों में जमाने के साथ चलने के लिए आवश्यक ज्ञान व कौशल प्रदान करना है। सतत शिक्षा के कार्य में जन शिक्षण निलियम महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। इसके तहत चार-पाँच गाँवों के समूह जिनकी आबादी लगभग 5000 है, के लिए एक जन शिक्षण निलियम खोला जाएगा।

सतत शिक्षा का प्रारम्भ पत्राचार शिक्षा के रूप में हुआ। भारत वर्ष में 1962 में दिल्ली विश्वविद्यालय (Open University) के द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम का शुभारम्भ किया गया था। 1971 में ब्रिटेन के मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा अपने शैक्षिक कार्यक्रम शुरू करने के उपरान्त सतत शिक्षा का तेजी से विकास हुआ। सतत शिक्षा से तात्पर्य लगातार शिक्षा प्रदान करने से है। सतत शिक्षा का प्रत्यय पत्राचार शिक्षा से अधिक व्यापक है। सतत शिक्षा के कार्यों में सायंकालीन कक्षा लगाना, पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था करना, जनसमस्याओं पर चर्चा करने के लिए चर्चा मण्डल गठित करना, स्वास्थ्य परिवार कल्याण, कृषि, पशुपालन, ऊर्जा संरक्षण आदि की नवीन जानकारी प्रदान करने के लिए सरल व कम अवधि वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना, खेल तथा साहसपूर्ण कार्य कलापों का आयोजन करना, मनोरंजन तथा सांस्कृतिक कार्यकलापों को आयोजित करना आदि आते

Scanned with CamScanner

है। ट्रेड यूनियन विश्वविद्यालय, कालेज, पुस्तक प्रकाशन, सायंकालीन पुस्तकालय व वाचनालय आदि के माध्यम से भी सतत् शिक्षा उपलब्ध करायी जा रही है। दूसरे शब्दों में दूरस्थ शिक्षा में मुद्रित सामग्री, रेडियो व दूरदर्शन प्रसारण, श्रव्य-दृश्य सामग्री, कम्प्यूटर तथा अध्ययन केन्द्र जैसे साधनों का उपयोग करके शिक्षा प्रदान की जाती है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) सतत् शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

Scanned with CamScanner